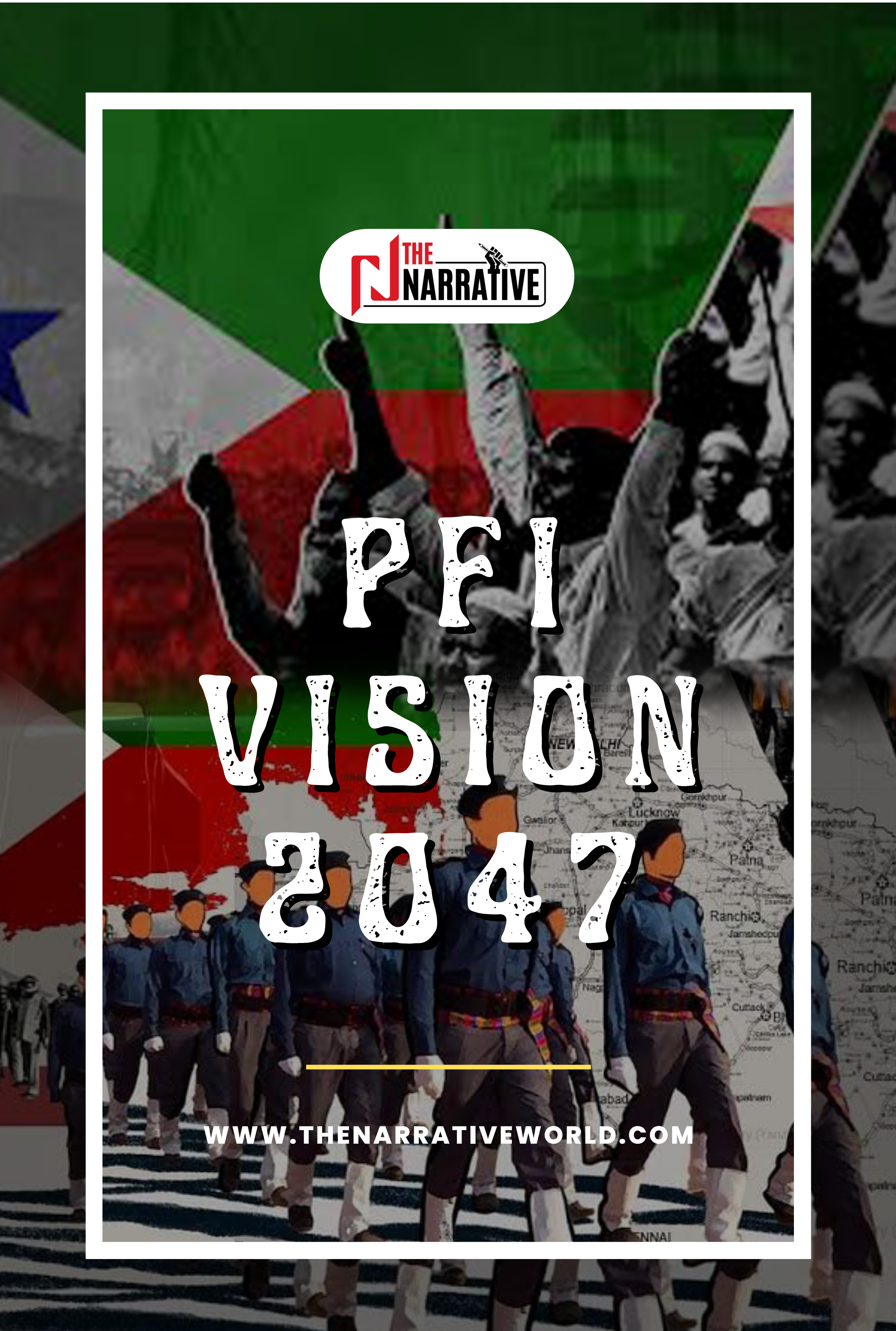

THE NARRATIVE

PFI VISION 2047

WWW.THENARRATIVEWORLD.COM

जानिए क्या है पीएफआई का भारत को इस्लामिक राष्ट्र बनाने का विज़न 2047

संगठन की जड़े

- कट्टरपंथी इस्लामिक संगठन पीएफआई की स्थापना 22 नवंबर 2006 को हुई थी, जिसकी स्थापना के समय बाबरी ढांचे के बाद स्थापित किए गए संगठन एनडीएफ समेत दो अन्य संगठनों का इसमे विलय किया गया था।

- संगठन को 2004 में प्रतिबंधित संगठन 'स्टूडेंट इस्लामिक मूवमेंट ऑफ इंडिया' (सिमी) का उत्तराधिकारी माना जाता है जिसके कई बड़े अधिकारी पीएफआई में बड़े दायित्वों पर हैं।

- संगठन का नाम पहली बार राष्ट्रीय स्तर पर तब चर्चा में आया जब पैगम्बर मोहम्मद के विषय मे की गई टिप्पणी को लेकर वर्ष 2010 में इसके कैडरों ने केरल के प्रोफेसर टी जे जोसेफ का दाहिना हाथ काट दिया था।

- संगठन की पकड़ दक्षिण भारत मे बेहद मजबूत मानी जाती है, जहां केरल में इसके द्वारा कट्टरपंथी संगठन आईएसआईएस (ISIS) के लिए लड़ाकों को भर्ती करने से संबंधित पुख्ता साक्ष्य मिले हैं।

- पिछले कुछ वर्षो में संगठन ने उत्तर भारत मे भी अपनी पकड़ बेहद मजबूत की है जिससे संबंधित सभी गतिविधियों का संचालन संगठन के शाहीन बाग, दिल्ली स्थित मुख्यालय से किया जाता है।

- राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) के अनुसार संगठन भारत के 23 राज्यों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य मुस्लिम युवकों में कट्टरता भर कर उन्हें देश विरोधी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित करना है।

जानिए क्या है पीएफआई का भारत को इस्लामिक राष्ट्र बनाने का विज़न 2047

विचारधारा

- पीएफआई संगठन 'नियो सोशल समूह' होने का दंभ भरता है हालांकि स्थापना के उपरांत से अब तक इसकी गतिविधियां मुस्लिम राजनीति को केंद्र में रखकर की जाने वाली हिंसा एवं विरोध प्रदर्शनों तक ही सीमित रही है

- संगठन धार्मिक स्वतंत्रता के नाम पर मुस्लिमों के लिए विशेषाधिकार की पैरोकारी करता आया है

- बिहार से बरामद किए गए 'विज़न 2047' के अनुसार संगठन बहुसंख्यक हिन्दू समुदाय के भीतर फुट डालने एवं उन्हें आरएसएस के विरुद्ध भड़काने की योजना पर काम कर रहा है

- जब्त किए गए डॉक्यूमेंट के अनुसार पीएफआई इस्लामिक वर्चस्व स्थापित करने तक एससी, एसटी एवं ओबीसी श्रेणी के हिंदुओ को साथ लेके चलने एवं उनके माध्यम से राजनीतिक सत्ता हथियाने की योजना पर आगे बढ़ रहा है

- बिहार पुलिस के खुलासे के अनुसार संगठन का मत है कि जब तक वे विज़न 2047 के चौथे चरण (बड़े पैमाने पर नरसंहार) तक नहीं पहुंच जाते तब तक अपनी गतिविधियों को उन्हें संवैधानिक अधिकारों की आड़ में छुपाना है

- संगठन मानता है कि इसके लिए संविधान, राष्ट्रीय ध्वज एवं अंबेडकर को हथियार के रूप में उपयोग किया जा सकता है

जानिए क्या है पीएफआई का भारत को इस्लामिक राष्ट्र बनाने का विज़न 2047

हिंसा में संलिप्तता

- पीएफआई पर दिल्ली के हिन्दू विरोधी दंगो को भड़काने एवं पोषित करने का गंभीर आरोप है
- संगठन पर शाहीन बाग स्थित अपने मुख्यालय से शाहीन बाग के प्रदर्शनों को संचालित करने का भी आरोप है
- इसके अतिरिक्त भी संगठन देश भर में हुए सीएए एवं एनआरसी विरोधी हिंसक प्रदर्शनों के पीछे की शक्ति माना जाता है
- सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार उत्तरप्रदेश एवं आसाम में सीएए एवं एनआरसी संबंधित हिंसक प्रदर्शनों की योजना एवं क्रियान्वयन के पीछे भी पीएफआई का ही हाथ था
- इन हिंसक प्रदर्शनों के पूर्व पीएफआई के बैंक खातों से करोड़ो रुपए के लेन-देन की भी पुष्टि हुई है, अभी हाल ही में बिहार के फुलवारी-शरीफ टेरर मॉड्यूल में भी संगठन से संबंधित खाते से 90 लाख रुपए की निकासी की बात सामने आई है
- सुरक्षा एजेंसियों को ऐसे भी साक्ष्य बरामद हुए हैं जिसमे संगठन के वित्तीय पोषण के तार अरब देशों से जुड़ते दिखाई दे रहे हैं

THE NARRATIVE

जानिए क्या है पीएफआई का भारत को इस्लामिक राष्ट्र बनाने का विज़न 2047

05

भविष्य की चुनौतियां

- पीएफआई भारत को इस्लामिक राष्ट्र बनाने के मंशा रखता है जिसके लिए संगठन पहले अपना देशव्यापी संगठनात्मक ढांचा मजबूत करने की कवायद में जुटा है।
- बिहार से बरामद किए गए डॉक्यूमेंट के अनुसार संगठनात्मक ढांचा मजबूत करने के क्रम में संगठन को आंशिक रूप से सफलता भी मिली है।
- सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार केरल में अपनी स्थिति मजबूत करने के उपरांत पीएफआई उत्तर भारतीय राज्यों जैसे उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार एवं राजधानी दिल्ली में तेजी से पांव पसार रही है।
- सुरक्षा विशेषज्ञों के अनुसार मुस्लिम युवाओं में कट्टरता का भाव भरने एवं उन्हें हथियारों का प्रशिक्षण उपलब्ध कराने की संगठन की रणनीति सामाजिक सुरक्षा के लिए भी गंभीर खतरा है।
- बिहार से बरामद किए गए डॉक्यूमेंट के अनुसार संगठन का अंतिम लक्ष्य इन प्रशिक्षित कैडरों के माध्यम से बहुसंख्यक समुदाय का नरसंहार करने एवं भारत राज्य से निर्णायक युद्ध की परिस्थिति में अर्द्धसैनिक बलों एवं सेना को चुनौती देने का ही है।
- इसलिए ये बेहद आवश्यक है कि राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से पीएफआई जनित खतरों को भांपते हुए भारत सरकार एवं संबंधित राज्य सरकारें पीएफआई के विरुद्ध कड़े कदम उठाए।
- आवश्यक यह भी है कि संगठन की विद्वेषित मानसिकता की पहचान कर बहुसंख्यक समुदाय का कोई भी तबका या समूह जाने-अनजाने भारत को इस्लामिक राष्ट्र बनाने के पीएफआई के षड़यंत्र का सहभागी ना बने।